

यह हकीकत है

लेखक: हुज्जतुल इस्लाम शेख जाफ़र अल हादी

किताब: यह हकीकत है

लेखक: हुज्जतुल इस्लाम वल मुसलेमीन शेख जाफ़र अल हादी

---

एक दूसरे से पहचान की ज़रूरत (.....)

और फिर तुम में शाखें और कबीले करार दिये हैं ताकि आपस में एक दूसरे को पहचान सको।

(सूर ए हुजरात आयत 13)

इस्लाम जब आया तो आपस में लोग अलग अलग और बहुत से गिरोहों में बटे हुए ही नहीं थे बल्कि एक दूसरे से लड़ाई, झगड़े और खून खराबे में लगे रहते थे मगर इस्लामी तालीमात के सदक़े में आपसी दुश्मनी और एक दूसरे से अजनबियत की जगह मेल जोल और दुश्मनी की जगह एक दूसरे की मदद और रिश्ते तोड़ने की बजाए नज़दीकी पैदा हुई और इसका नतीजा यह हुआ कि इस्लामी हुकुमत एक अज़ीम उम्मत की शकल में सामने आई।

जिसने उस वक़्त अज़ीम इस्लामी तहज़ीब व तमददुन को पेश किया और इस्लाम से वाबस्ता गिरोहों को हर ज़ालिम व जाबिर से बचा लिया और उनकी पुश्त पनाही की। जिस की बेना पर यह उम्मत दुनिया की तमाम कौमों में क़ाबिले ऐहतेराम करार पाई और ज़ालिमों की निगाहों में रोब व दबदबे और हैबत के साथ ज़ाहिर हुई।

लेकिन यह सब चीज़ें नहीं वुजूद में आयीं मगर इस्लामी उम्मत के दरमियान आपस का इत्तेहाद व भाईचारगी और तमाम गिरोहों का एक दुसरे से राब्ता रखने की बेना पर जो कि दीने इस्लाम के साये में हासिल हुआ था, हालाँकि इन की शहरियत, राय, सक़ाफ़त, पहचान और तकलीद अलग अलग थी। अलबत्ता उसूल व असास फ़रायज़ व वाजिबात में इत्तेफ़ाक़ व इत्तेहाद काफ़ी हद तक मौजूद था। यकीनन इत्तेहाद, कुव्वत और इख़्तिलाफ़ कमज़ोरी है।

बहरहाल यह मसअला इसी तरह जारी रहा यहाँ कि एक दूसरे से जान पहचान और आपसी मेल जोल की जगह इख़्तिलाफ़ात ने ले ली और एक दूसरे की समझने की जगह नफ़रत ने ले ली और एक गिरोह दूसरे गिरोह के बारे में कुफ़्र के फ़तवे देने लगा इस तरह फ़ासले पर फ़ासले बढ़ते गये। जिसकी वजह से

जो रही सही इज़्जत थी वह भी रुखसत हो गई और मुसलमानों की सारी शानो शौकत खत्म हो गई और सारा रोब व दबदबा जाता रहा और हालत यह हुई कि क़यामत की अलमबरदार क्रौम ज़ालिमों के हाथों ज़िल्लत व रुसवाई उठाने पर मजबूर हो गई। यहाँ तक कि उनकी नशवो नुमा के दहानों में लोमड़ी और भेड़िये सिफ़त लोग क़ाबिज़ हो गये। यही नहीं बल्कि उनके घरों के अंदर तमाम आलम की बुराईयाँ, और दुनिया के सबसे बुरे और खराब लोग घुस आये। नतीजा यह हुआ मुसलमानों का सारा माल व मनाल लूट लिया गया और उनके मुक़द्देसात की तौहीन होने लगी और उनकी इज़्जतें फ़ासिक़ो और फ़ाजिरों की मरहूने मिन्नत हो गई और पस्ती के बाद पस्ती और हार के बाद हार होने लगी। कहीं अंदलुस में खुली हुई हार का सामना हुआ तो कहीं बुखारा और समरकंद, ताशकंद, बग़दाद, माज़ी और हाल में फ़िलिस्तीन और अफ़ग़ानिस्तान में हार पर हार का सामना करना पड़ा।

और हाल यह हो गया कि लोग मदद के लिये बुलाते थे लेकिन कोई जवाब देने वाला न था, फ़रियाद करने वाले थे मगर कोई उनकी फ़रियाद सुनने वाला नहीं था।

ऐसा क्यों हुआ, इसलिये कि बीमारी कुछ और थी दवा कुछ और, अल्लाह ने तमाम कामों की बागडोर उनके ज़ाहिरी असबाब पर छोड़ रखी है, क्या इस उम्मत की इसलाह उस चीज़ के अलावा किसी और चीज़ से भी हो सकती है कि जिससे इब्तेदा में हुई थी?

आज उम्मते इस्लामी अपने खिलाफ़ किये जाने वाले समाजी, अक़ीदती और इत्तेहाद मुखालिफ़ सबसे शदीद और सख्त हमले से जूझ रही है, मज़हबी मैदानों में अंदर से इख़्तिलाफ़ किया जा रहा है, इज्तेहादी चीज़ों को इख़्तिलाफ़ी चीज़ों के तौर पर पेश किया जा रहा है और यह हमला ऐसा है कि इसके बुरे नतीजे ज़ाहिर होने वाले ही हैं, क्या ऐसे मौक़े पर हम लोगों के लिये बेहतर नहीं है कि अपने इत्तेहाद की सफ़ों को मुत्सिल रखें और आपसी ताअल्लुकात को मोहकम व मज़बूत करें? हम मानते हैं कि अगरचे हमारे बाज़ रस्म व रिवाज अलग अलग हैं मगर हमारे दरमियान बहुत सी चीज़ें ऐसी हैं जो एक और मुशतरक हैं जैसे किताब व सुन्नत जो कि हमारा मरकज़ और सर चश्मा हैं, वह मुशतरक हैं तौहीद व नबुव्वत, आख़िरत पर सब का ईमान है, नमाज़ व रोज़ा, हज व ज़कात, जिहाद और हलाल व हराम यह सब हुक्मे शरीयत हैं जो सब के लिये एक और मुशतरक हैं, नबी ए अकरम (स) और उनके अहले बैत (अ) से मुहब्बत और उनके दुश्मनों से नफ़रत करना हमारे मुशतरेकात में से हैं।

अलबता इसमें कमी व ज़ियादती ज़रूर पाई जाती है, कोई ज़्यादा मुहब्बत और दुश्मनी का दावा करता है और कोई कम, लेकिन यह ऐसा ही है जैसे कि एक हाथ की तमाम उँगलियाँ आखिर में एक ही जगह (जोड़ से) जाकर मिलती हैं, हालाँकि यह तूल व अर्ज़ और शकल व सूरत में एक दूसरे से मुख्तलिफ़ हैं या उसकी मिसाल एक जिस्म जैसी है, जिसके आज़ा व जवारेह मुख्तलिफ़ होते हैं, मगर बशरी फ़ितरत के मुताबिक़ जिस्मानी पैकर के अंदर हर एक का किरदार जुदा जुदा होता है और उनकी शकलों में इख़्तिलाफ़ पाया जाता है, मगर इसके बावजूद एक दूसरे के मददगार होते हैं और उनका मजमूआ एक ही जिस्म कहलाता है।

चुनाँचे बईद नही है कि उम्मतें इस्लामिया की तशबीह जो यदे वाहिद और एक बदन से दी गई है इस में इसी हकीकत की तरफ़ इशारा किया गया हो।

साबिक़ में मुख्तलिफ़ इस्लामी फिरकों और मज़ाहिब के उलामा एक दूसरे के साथ बग़ैर किसी इख़्तिलाफ़ के ज़िन्दगी गुज़ारते थे बल्कि हमेशा एक दूसरे के साथ मदद किया करते थे, हता बाज़ ने एक दूसरे के अक्रायदी या फ़िक़ही किताबों के शरह तक की है और एक दूसरे से शरफ़े तलम्मुज़ हासिल किया, यहाँ तक

कि बाज़ तो दूसरे की तकरीम की बेना पर बुलंद हुए और एक दूसरे की राय की ताईद करते, बाज़ बाज़ को इजाज़ ए रिवायत देते या एक दूसरे से इजाज़ ए नक़ले रिवायत लेते थे ताकि उनके फिरके और मज़हब की किताबों से रिवायत नक़ल कर सकें और एक दूसरे के पीछे नमाज़ पढ़ते, उन्हें इमाम बनाते, दूसरे के ज़कात देते, एक दूसरे के मज़हब को मानते थे, खुलासा यह कि तमाम गिरोह बड़े प्यार व मुहब्बत से एक दूसरे के साथ ऐसे ज़िन्दगी गुज़ारते थे, यहाँ तक कि ऐसा महसूस होता था कि जैसे उनके दरमियान कोई इख़्तिलाफ़ ही नहीं है, जबकि उन के दरमियान तन्कीदें और ऐतेराज़ात भी होते थे लेकिन यह तंकीदें मुहज़ज़ब व मुवद्दब अंदाज़ में किसी इल्मी तरीके से रद्द होती थी।

इस के लिये ज़िन्दा और तारीखी दलीलें मौजूद हैं, जो इस अमीक और वसीअ तआवुन पर दलालत करती हैं, मुस्लिम उलामा ने इसी तआवुन के ज़रिया इस्लामी सक़ाफ़त और मीरास को सैराब किया है, उन्ही चीज़ों के ज़रिये मज़हबी आज़ादी के मैदान में उन्होने ताज्जुब आवर मिसालें कायम की हैं बल्कि वह इसी तआवुन के ज़रिये दुनिया में काबिले ऐहेतेराम करार पाये हैं।

यह मुश्किल मसअला नही है कि उलामा ए उम्मतते मुसलिमा एक जगह जमा न हो सकें और सुल्ह व सफाई से किसी मसअले में बहस व मुबाहसा न कर सकें और किसी इख्तिलाफी मसअले में इखलास व सिदके नीयत के साथ गौर व खौज़ न कर सकें, नीज़ हर गिरोह को न पहचान सकें।

जैसे यह बात कितनी माकूल और हसीन है कि हर फिरका अपने अक्रायद और फिकही व फिक्री मौक़िफ को आज़ादाना तौर पर वाज़ेह फ़ज़ा में पेश करे, ता कि उनके खिलाफ़ जो इतेहाम, ऐतेराज़, दुश्मनी और बेजा जोश में आने का, जो उमूर सबब बनते हैं वह वाज़ेह व रौशन हो जायें और इस बात को सभी जान लें कि हमारे दरमियान मुशतरक और इख्तिलाफी मसायल क्या हैं ता कि लोग उस से जान लें कि मुसलमानों के दरमियान ऐसी चीज़ें ज़्यादा हैं जिन पर सबका इतेफ़ाक़ है और उनके मुक़ाबले में इख्तिलाफी चीज़ें कम हैं, इससे मुसलमानों के दरमियान मौजूद इख्तिलाफ़ और फ़ासले कम होंगे और वह एक दूसरे के नज़दीक आ जायें।

यह रिसाला इसी रास्ते का एक क़दम है, ता कि हकीक़त रौशन हो जाये और उस को सब लोग अच्छी तरह पहचान लें, बेशक अल्लाह तौफ़ीक़ देने वाला है।



फिरक ए इमामिया जाफरिया

1. दौरे हाज़िर में इमामिया फिरका मुसलमानों का बड़ फिरका है, जिसकी कुल तादाद मुसलमानों की तकरीबन एक चौथाई है और इस फिरके की तारीखी जड़ें सदरे इस्लाम के उस दिन से शुरु होती हैं कि जिस सूरे ए बय्यनह की यह आयत नाज़िल हुई थी:

(.....)

(सूरे ए बय्यना आयत 7)

बेशक जो लोग ईमान लाये और अमले सालेह अंजाम दिया वही बेहतरीने मखलूक हैं।

चुनाँचे जब यह आयत नाज़िल हुई तो रसूले खुदा (स) ने अपना हाथ अली (अ) के शाने पर रखा उस वक़्त असहाब भी वहाँ मौजूद थे और आपने फ़रमाया:

(.....)

ऐ अली, तुम और तुम्हारे शिया बेहतरीने मखलूक हैं।

इस आयत की तफ़सीर के ज़ैल में देखिये, तफ़सीरे तबरी (जामेउल बयान), दुर्रे मंसूर (तालीफ़, अल्लामा जलालुद्दीन सुयुती शाफ़ेई), तफ़सीरे रुहुल मआनी तालीफ़ आलूसी बग़दादी शाफ़ेई।

इसी वजह से यह फिरका जो कि इमाम जाफ़रे सादिक (अ) की फ़िक्रह में उनका पैरोकोर होने की बेना पर उनकी तरफ़ मंसूब है। शिया फिरके का नाम से मशहूर हुआ।

2. शिया फिरका बड़ी तादाद में ईरान, इराक़, पाकिस्तान, हिन्दुस्तान, में ज़िन्दगी बसर करता है, इसी तरह उस की एक बड़ी तादाद खाड़ी देशों तुर्की, सीरिया (शाम), लेबनान, रूस और उससे अलग होने वाले बहुत से नये देशों में मौजूद हैं, नीज़ यह फिरका यूरोपी मुल्कों जैसे इंग्लैंड, फ़्रांस, जर्मनी और अमेरिका, इसी तरह अफ़्रीका के मुमालिक और मशरिकी एशिया में भी फैला हुआ है, उन मकामात पर उनकी मस्जिदें और इल्मी, सकाफ़ती और समाजी मराकिज़ भी हैं।

3. इस फिरके के लोग अगरते मुख्तलिफ़ मुल्कों, क़ौमों और रंग व नस्ल से ताअल्लुक रखते हैं लेकिन इसके बावजूद अपने दीगर मुसलमान भाईयों के साथ बड़े प्यार व मुहब्बत से रहते हैं और तमाम आसान या मुश्किल मैदानों में सच्चे दिल और

इखलास के साथ उनका तआवुन करते हैं और यह सब अल्लाह के इस फ़रमान पर अमल करते हुए इसे अंजाम देते हैं:

(.....)

(सूर ए हुजरात आयत 10)

मोमिनीन आपस में भाई भाई हैं।

या इस क़ौले खुदा पर अमल करते हैं:

(.....)

नेकी और तक़वा में एक दूसरे की मदद करो।

(सूर ए मायदा आयत 2)

और अल्लाह के रसूल (अ) के इस क़ौल की पाबंदी करते हुए:

1. (.....)

(मुसनदे अहमद बिन हम्बल जिल्द 1 पेज 215)

मुसलमान आपस में एक दूसरे के लिये एक हाथ की तरह हैं।

या आपका यह क़ौल उन के लिये मशअले राह है:

2. (.....)

मुसलमान सब आपस में एक जिस्म की तरह हैं।

(अस सहीहल बुखारी, जिल्द 1 किताबुल अदब पेज 27)

4. पूरी तारीखे इस्लाम में दीने खुदा और इस्लामी उम्मत के देफ़ाअ के सिलसिले में इस फिरके का एक अहम और वाजेह किरदार रहा है जैसे उसकी हुकुमतों, रियासतों ने इस्लामी सकाफ़त व तमददुन की हमेशा खिदमत की है, नीज़ इस फिरके के उलामा और दानिशवरों ने इस्लामी मीरास को ग़नी बनाने और बचाने के सिलसिले में मुख्तलिफ़ इल्मी और तजरूबी मैदानों में जैसे हदीस, तफ़सीर, अकायद, फ़िक़ह, उसूल, अख़लाक, देराया, रेजाल, फ़लसफ़ा, मौऐज़ा, हुकुमत, समाजियात, ज़बान व अदब बल्कि तिब व फ़िज़िक्स किमीया, रियाज़ियात, नुज़ूम और उसके अलावा बहुत हयातियाती उलूम के बारे में लाखों किताबें तहरीर करके इस सिलसिले में बहुत अहम किरदार अदा किया है बल्कि बहुत से उलूम की बुनियाद रखने वाले उलामा इसी फिरके से ताअल्लुक रखते हैं।[1]

5. शिया फिरका मोअतकीद है कि खुदा अहद व समद है, न उसने किसी को जना है और न उसे किसी ने जन्म दिया है और न ही कोई उसका हमसर है और उससे जिस्मानियत, जेहत, मकान, ज़मान, तगय्युर, हरकत, सऊद व नुज़ूल वगैरह जैसी सिफ़तें जो उसकी सिफ़ाते कमाल व जलाल व जमाल के शायाने शान नहीं हैं, उनकी नफ़ी करता है।

और शिया यह अक़ीदा रखते हैं कि उसके अलावा कोई मअबूद नहीं, हुक्म और तशरीअ (शरीयत के क़ानून बनाना) सिर्फ़ उसी के हाथ में है और हर तरह का शिर्क चाहे वह ख़फी हो या जली एक अज़ीम जुल्म और न बख़शा जाने वाला गुनाह है।

और शियों ने यह अक्रायद: अक़ले मोहकम (सालिम) से अख़ज़ किये है, जिनकी ताईद व तसदीक़ किताबे खुदा और सुन्नते शरीफ़ा से भी होती है।

और शियों ने अपने अक्रायद के मैदान में उन हदीसों पर तकिया नहीं किया है जिन में इसराईलियात (जाली तौरैत और इंजील) और मजूसीयत की घड़ी हुई बातों की आमेज़िश है, जिन्होंने अल्लाह तआला को इंसान की तरह माना है और वह उसकी तशबीह मख़लूक से देते हैं या फिर उसकी तरफ़ जुल्म व जौर और लग़व व अबस जैसे अफ़आल की निस्बत देते हैं, हालाँकि अल्लाह तआला उन तमाम बातों से निहायत बुलंद व बरतर है या यह लोग खुदा के पाक व पाक़ीज़ा मासूम नबियों की तरफ़ बुराईयों और कबीह बातों की निस्बत देते हैं।

6. शिया अक्कीदा रखते हैं कि खुदा आदिल व हकीम है और उसने अदल व हिकमत से खल्क किया है, चाहे वह जमाद हो या नबात, हैवान हो या इंसान, आसमान हो या ज़मीन, उसने कोई शय अबस नहीं खल्क की है, क्योंकि अबस (फुज़ूल या बेकार होना) न तंहा उसके अदल व हिकमत के मनाफ़ी है बल्कि उसकी उलूहीयत से भी मनाफ़ी है जिसका लाज़िमा है कि खुदा वंदे आलम के लिये तमाम कमालात का इस्बात किया जाये और उससे हर किस्म के नक्स और कमी नफ़ी की जाये।

7. शिया यह अक्कीदा रखते हैं कि खुदा वंदे आलम ने अदल व हिकमत के साथ इब्तेदाए ख़िलक़त से ही उसकी तरफ़ अंबिया और रसूलों को मासूम बना कर भेजा और फिर उन्हें वसीअ इल्म से आरास्ता किया जो वही के ज़रिये अल्लाह की जानिब से उन्हें अता किया गया और यह सब कुछ बनी आदम की हिदायत और उसे उसके गुमशुदा कमाल तक पहुचाने के लिये था ता कि उसके ज़रिये से ऐसी ताअत की तरफ़ भी उसकी रहनुमाई हो जाये जो उसे जन्नती बनाने के साथ साथ परवरदिगार की खुशनुदी और उसकी रहमत का मुसतहिक़ करार दे और उन अंबिया व मुरसलीन के दरमियान आदम, नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा और हज़रत मुहम्मद मुसतफ़ा (स) सबसे मशहूर हैं जिनका ज़िक़र कुरआने मजीद में आया है या जिन के असमा और हालात हदीसों में बयान हुए हैं।

8. शियों का अक्कीदा है कि जो अल्लाह की इताअत करे, उसके अवामिर को नाफ़िज़ करे और ज़िन्दगी के हर शोअबे में उसके क़वानीन पर अमल करे वह निजात याफ़ता और कामयाब है और वही मदह व सवाब का हक़दार है, चाहे वह हबशी गुलाम ही क्यो न हो और जिसने अल्लाह की नाफ़रमानी की और उसके अवामिर को न पहचाना और अल्लाह के अहकाम के बजाए दूसरों के अहकाम के बंधन में बंध गया, वह मज़म्मत, हलाक शुदा और घाटा उठाने वालों में से है, चाहे वह करशी सैयद ही क्यो न हो जैसा कि पैग़म्बरे इस्लाम (स) की हदीसे शरीफ़ में आया है।

शिया अक्कीदा रखते हैं कि सवाब व सज़ा मिलने की जगह क़यामत का दिन है। जिस दिन हिसाब व किताब, मीज़ान व जन्नत व जहन्नम सबके सामने होंगे और यह मरहला बरज़ख़ और आलमे क़ब्र के बाद होगा, नीज़ अक्कीद ए तनासुख़ जिसके मुनकेरीने क़यानत कायल हैं, उसको शिया बातिल करार देते हैं क्योकि अक्कीद ए तनासुख़ से कुरआने करीम और हदीसे पाक की तकज़ीब लाज़िम आती है।

9. शिया अक्कीदा रखते हैं कि अंबिया व मुरसलीन की आखिरी फ़र्द और उन सबसे अफ़ज़ल नबी हज़रत मुहम्मद बिन

अबदुल्लाद बिन अब्दुल मुत्तलिब हैं, जिन्हे खुदा वंदे आलम ने हर खता व लगजिश से महफूज़ रखा और हर गुनाहे सगीरा व कबीरा से मासूम करार दिया है चाहे वह कबले नबुव्वत हो या बादे नबुव्वत, तबलीग का मरहला हो या कोई और काम हो और उनके ऊपर कुरआने करीम नाज़िल किया ता कि वह इंसानी ज़िन्दगी के लिये एक हमेशा बाकी रहने वाले क़ानून और दस्तूरुल अमल करार पाये। पस रसूले इस्लाम (स) ने रिसालत की तबलीग की और अमानत व सदाक़त व इखलास के साथ लोगों तक पहुचा दिया और इस अहम और कीमती रास्ते में हर मुम्किन कोशिश की, शिया हज़रात के यहाँ रसूले इस्लाम की शख़िसयत, आपके खुसूसियात, मौजिज़ात और आपके हालात से मुतअल्लिक सैकड़ों किताबें मौजूद हैं।

बतौरै नमूना देखिये: किताब अल इरशाद तालीफ़ शेख मुफीद, आलामुल वरा, आलामुल होदा, तालीफ़ तबरसी, मौसूआ (मोअजम) बिहारुल अनवार, तालीफ़ अल्लामा मजलिसी और मौजूदा दौर की मौसूअतुर रसूलिल मुस्तफ़ा, तालीफ़ मोहसिन खातेमी।

10. शियो का अक्कीदा है कि कुरआने करीम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स) पर हज़रत जिबरईल (अ) के ज़रिये नाज़िल हुआ, जिसे कुछ बुजुर्ग सहाबा ने रसूले इस्लाम (स) के दौर में आपके



हुक्म से जमा और मुरतब किया। जिन में सरे फ़ेहरिस्त हज़रत अली बिन अबी तालिब (अ) है, इन हज़रात ने बड़ी मेहनत और मशक्कत के साथ उसको लफ़्ज़ व लफ़्ज़ याद किया और उसके हुरुफ़ व कलेमात नीज़ सूरह व आयात की तादाद भी मुशख़्खस व मुअय्यन कर दी, इस तरह यह एक के बाद दूसरी नस्ल तक मुन्तक़िल होता आ रहा है और आज मुसलमानों के तमाम फ़िरके रात व दिन उसकी तिलावत करते हैं, न उसमें कोई ज़ियादती हुई और न ही कोई कमी, यह हर किस्म की तहरीफ़ व तबदीली से महफूज़ है, शिया हज़रात के यहाँ इस बारे में भी मुतअद्दिद छोटी और बड़ी किताबें मौजूद हैं।[2]

11. शिया अक्कीदा रखते हैं कि जब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स) की वफ़ात का वक़्त करीब हुआ तो आपने हज़रत अली (अ) को तमाम मुसलमानों की रहबरी के लिये अपना ख़लीफ़ा और लोगों के लिये इमाम के तौर पर मंसूब किया ता कि अली (अ) उनकी सियासी क़यादत और फ़िक्री रहनुमाई फ़रमाएँ और उनकी मुश्किलों को हल करें, उनके नुफ़ूस का तज़किया करें और उनकी तरबीयत करें और यह सब खुदा के हुक्म से मक़ामे ग़दीरे ख़ुम में रसूल (स) की हयात के आख़िरी दौर और आख़िर हज के बाद, उन मुसलमान हाजियों के दूर तक फैले मजमें अंजाम पाया, जो आपके साथ उसी वक़्त हज करके वापस आ रहे थे,

जिनकी तादाद बाज़ रिवायात के मुताबिक एक लाख तक पहुचती है और उस मुनासिबत पर कई आयते नाज़िल हुईं।[3]

उसके बाद नबी ए अकरम (स) ने अली (अ) के हाथों पर लोगों से बैअत तलब की, चुनाँचे तमाम लोगों ने बैअत की और उन बैअत करने वालों में सबसे आगे मुहाजेरीन व अंसार के बुजुर्ग और मशहूर सहाबा थे मज़ीद तफ़सील के लिये देखिये: किताब अल गदीर, जिस में अल्लामा अमीनी ने मुसलमानों के तफ़सीरी और तारीखी मसादिर व मआख़िज़ से इस वाक़ेया को नक्कल किया है।

12. शियों का अक्कीदा है कि चूँकि रसूले अकरम (स) के बाद इमाम की ज़िम्मेदारी वही है जो नबी की होती है जैसे उम्मत की क़यादत व हिदायत, तालीम व तरबीयत, तबयीने अहकाम और उनकी मुश्किलात का हल करना, नीज़ समाजी अहम उमूर का हल करना, लिहाज़ा यह ज़रूरी है कि इमाम और खलीफ़ा ऐसा होना चाहिये कि लोग उस पर भरोसा और ऐतेबार करते हों ताकि वह उम्मत तो अम्न व अमान के साहिल तक पहुचा सके, पस इमाम तमाम सलाहियतों और सिफ़ात में नबी जैसा होना चाहिये। जैसे (इस्मत और वसीअ इल्म) क्योकि इमाम

के फ़रायज़ भी नबी की तरह होते हैं। अलबत्ता वही और नबुव्वत के अलावा, क्योंकि नबुव्वते हज़रते मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह पर खत्म हो गई, आप ही खातिमुल अँबिया ए वल मुरसेलीन हैं, नीज़ आपका दीन खातिमुल अदयान और आपकी शरीयत खातिमुश शरीया और किताब खातिमुल कुतुब है, न आपके बाद कोई नबी और न आपके दीन के बाद कोई दीन और इसी तरह न आपकी शरीयत के बाद कोई शरीयत आयेगी। (शियों के पास इस मैदान में भी मुतअद्दिद और मुख्तलिफ़ ज़खीम, फ़िक्री और इस्तिदलाली किताबों मौजूद हैं।)

> 13. शियों का अक्रीदा है कि उम्मत को सीधी राह पर चलाने वाले मासूम कायद और वली की ज़रूरत इस बात की मुकतज़ी और तलबगार है कि रसूल के बाद इमामत और ख़िलाफ़त का मंसब सिर्फ़ अली पर ही न ठहर जाये बल्कि क़यादत के इस सिलसिले को तवाल मुद्दत तक कायम रहना ज़रूरी है ता कि इस्लाम की जड़ें मज़बूत और उसकी बुनियादें महफूज़ हो जायें और जो ख़तरात उसके उसूल और क़वायद ही को नही बल्कि हर इलाही अक्रीदे और ख़ुदाई निज़ाम के सामने मुँह खोले खड़े हैं उनसे उसको बचाया जा सके और उसके लिये तमाम आईम्मा (मुख्तलिफ़ और मुतद्दिद दौर में उम्मत की रहबरी करके अपनी सीरत, तज़ुरबात और महारत का) ऐसा अमली

नमूना और प्रोग्राम पेश कर सकें जिस की मदद से तमाम हालात में बाद में चलती रही।

14. शिया अक्रीदा रखते हैं कि नबी ए अकरम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स) ने इसी सबब और इसी बुलंद पाया हिकमत की बेना पर अल्लाह के हुक्म की खातिर अली (अ) के बाद गयारह इमाम मुअय्यन फ़रमाये। लिहाज़ा हज़रत अली (अ) को मिला कर कुल बारह इमाम है। जैसा कि उनकी तादाद के बारे में नबी ए अकरम (स) की हदीसों में वज़ाहत के अलावा तज़क़िरा भी है कि उन सब का ताल्लुक़ क़बील ए कुरैश से होगा। जैसा कि सही बुखारी व सही मुस्लिम में मुख्तलिफ़ अल्फ़ाज़ के साथ इस मतलब की तरफ़ इशारा किया गया है। अलबत्ता उन के असमा और खुसूसियात का तज़क़िरा नहीं है:

.....

बुखारी और मुस्लिम दोनो ने रसूले खुदा (स) रिवायत नक़ल की है कि आपने फ़रमाया: बेशक़ दीने इस्लाम उस वक़्त तक ग़ालिब, कायम और मज़बूत रहेगा जब तक इस में बारह अमीर या बारह खलीफ़ा रहेगें, यह सब कुरैश से होंगें।

(बाज़ नुस्खों में बनी हाशिम भी आया है और कुतुबे सिहाहे सिता के अलावा दूसरी कुतुबे फ़ज़ायल व मनाकिब व शेर व अदब में उन हज़रात के असमा भी मज़कूर है।)

यह हदीसें अगरचे आईम्म ए इसना अशर (जो कि इमाम अली (अ) और औलादे अली (अ) हैं) के बारे में नस्स नहीं हैं लेकिन यह तादाद उसी पर मुनतबिक़ होती है जो शिया अक़ीदा रखते हैं और उसकी कोई तफ़सीर नहीं हो सकती मगर सिर्फ़ वही जो शिया कहते हैं।[4]

15. शियों का जाफ़री फ़िरका यह अक़ीदा रखता है कि आईम्म ए इसना अशर (बारह इमामों) से मुराद हज़रत अली बिन अबी तालिब जो रसूल (स) के चचा ज़ाद भाई और अपकी बेटी फ़ातेमा ज़हरा (स) के शौहर हैं।

और हसन व हुसैन हैं (जो अली व फ़ातेमा के बेटे और रसूले इस्लाम (स) के नवासे हैं।)

ज़ैनुल आबेदीन अली बिन हुसैन (अस सज्जाद)

उसके बाद:

इमाम मुहम्मद बिन अली (अल बाकिर)

इमाम जाफिर बिन मुहम्मद (अस सादिक)

इमाम मूसा बिन जाफ़र (अल काज़िम)

इमाम अली बिन मूसा (अर रिज़ा)

इमाम मुहम्मद बिन अली (अल जवाद अत तक़ी)

इमाम अली बिन मुहम्मद (अल हादी)

इमाम हसन बिन अली (अल असकरी)

इमाम मुहम्मद बिन हसन (अल महदी अल मौऊद अल मुन्तज़र (अ)) [5]

यही वह अहले बैत (अ) है जिन्हे रसूले ख़ुदा (स) ने अल्लाह के हुक्म से इस्लामी उम्मत का कायद करार दिया, क्योंकि यह तमाम ख़ताओं और गुनाहों से पाक और मासूम हैं, यही हज़रात अपने जद के वसीअ इल्म के वारिस हैं, उनकी मवद्दत और पैरवी की हुक्म दिया गया है जैसा कि ख़ुदा ने इरशाद फ़रमाया है:

(.....)

(सूर ए शूरा आयत 23)

ऐ रसूल, आप कह दीजिये कि मैं तुम से इस तबलीगो रिसालत का कोई अज़ नही चाहता अलावा इस के कि मेरे अकरबा से मुहब्बत करो।

(.....)

(सूर ए तौबा आयत 119)

ऐ ईमानदारों, तक्रवा इख्तियार करो और सच्चों के साथ हो जाओ।

देखिये कुतबे हदीस व तफ़सीर और फ़ज़ायल में फ़रीकैन के नज़दीक जो सहीह और दूसरी किताबें हैं।

16. शिया जाफ़री फिरका अक़ीदा रखता है कि यह आईम्म ए अतहार वह हैं जिनके दामन पर तारीख न कोई खता लिख सकी और न किसी ग़लती को साबित कर सकी, न कौल में न अमल में, उन्होने अपने ढेरों उलूम के ज़रिये उम्मते मुस्लिमा की खिदमत की है, और अपनी अमीक मारेफ़त, सालिम फ़िक्र के ज़रिये अक़ीदा व शरीयत, अखलाक व आदाब, तफ़सीर व तारीख और मुस्तक़बिल के लायेह ए अमल को सही जेहत अता की है और हर मैदान में इस्लामी सकाफ़त को महफूज़ कर दिया है जैसे उन्होने अपने कौल और अमल के ज़रिये चंद ऐसे मुनफ़रिद और मुमताज़, नेक सीरत और पाक किरदार

मर्दों और औरतों की तरबीयत की है, जिनके फ़ज़ल व इल्म और हुस्ने सीरत के सब लोग कायल हैं।

और शिया ऐतेक्काद रखते हैं कि अगर चे (यह बहुत अफ़सोस का मक़ाम है) उम्मत इस्लामिया ने उनको सियासी क़यादत से दूर रखा लेकिन उन्होंने फिर भी अक़ायद के उसूलों और शरीयत के क़वायद व अहक़ाम की हिफ़ाज़त करके अपनी फ़िक्री और समाजी ज़िम्मेदारी को बेहतरीन तरीक़े से अदा किया है।

चुनाँचे मिल्लेत मुस्लिमा अगर उन्हे सियासी क़यादत का मौक़ा देती जिसे रसूले इस्लाम (स) ने खुदा के हुक्म से उन्हे सौपा था तो यक़ीनन इस्लामी उम्मत सआदत व इज़ज़त और अज़मते कामिला हासिल करती और यह उम्मत मुत्तहिद व मुत्तफ़िक़ व मुत्तवहिहद रहती और किसी तरह का शिकाक़, इख़्तिलाफ़, नज़ाअ, लड़ाई, झगड़ा, कुश्त व कुश्तार और ज़िल्लत व रुसवाई का न देखना पड़ती।

इस सिलसिले में किताब अल इमाम सादिक़ वल मज़ाहिबिल अरबआ की तीन जिल्दें और दूसरी किताबें देखी जा सकती हैं।



17. शिया अक्कीदा रखते हैं कि मज़कूरा वजह और अक्रायद की किताबों में पाई जाने वाली नक्ली व अकली कसीर दलीलों की बेना पर अहले बैत (अ) की पैरवी वाजिब है और उनके रास्ते और तरीके को अपनाना ज़रूरी है क्योंकि उन्ही का तरीका वह तरीका है जिसे उम्मत के लिये रसूल (स) ने मुअय्यन फ़रमाया और उन से तमस्सुक का हदीसे सकलैन (जो मुतवातिर है) हुक्म देती है जैसा कि रसूले खुदा (स) ने इरशाद फ़रमाया है:

..... जिसे सही मुस्लिम और दीगर दसियों मुस्लिम उलामा व मुहददेसीन ने हर सदी में नक्ल किया है। देखिये, रिसाल ए हदीसे सकलैन (मुवल्लेफ़ा वशनवी) जिसकी तसदीक अज़हर शरीफ़ ने तीस साल पहले की थी।

और गुज़श्ता अंबिया की हयात में भी खलीफ़ा और वसी बनाने का यही तरीका था।

देखिये, इसबातुल वसीया, मुवल्लेफ़ा मसऊदी और फ़रीकैन की दीगर कुतुबे हदीस व तफ़सीर व तारीख़।

18. जाफ़री शिया अक्कीदा रखते हैं कि उम्मत इस्लामिया (अल्लाह उसको अज़ीज़ रखे) पर यह वाजिब है कि वह उन

उमूर में तहकीक़ और बहस व मुबाहिसा करे लेकिन किसी पर सब्ब व शत्म, इल्ज़ाम व तोहमत और किसी को डराये और धमकाये बिना और तमाम इस्लामी फ़िरकों के उलामा व मुफ़क्केरीन पर लाज़िम है कि वह इल्मी इजतेमा शिरकत करें और सफ़ा व इखलास के साथ गुफ़्तुगू करें और अपने शिया मुसलमान भाईयों के उन नज़रियात पर गौर व ख़ौज़ करे जिन पर वह कुरआन, सही मुतवातिर सुन्नत, तारीख़ी मुहासिबा (दलीलों) और रसूल और आँ हज़रत (स) के बाद के सियासी व समाजी के मुताबिक़ इस्तिदलाल पेश करते हैं।v

19. और शिया अक़ीदा रखते हैं कि सहाबा और जो लोग रसूल (स) के साथ थे चाहे वह औरत हों या मर्द, उन्होंने इस्लाम की बड़ी ख़िदमत की है, नशरे इस्लाम की राह में अपनी जान व माल की कुर्बानी दी है लिहाज़ा तमाम मुसलमानों पर वाजिब है कि उन का ऐहतेराम करें और उनकी गर्राँ क़द्र ख़िदमात का ऐतेराफ़ करें।v

लेकिन उसका मतलब यह भी नहीं कि तमाम सहाबा (बतौरै मुतलक़) आदिल थे और उनके बाज़ आमाल व नज़रियात, तंकीद और ऐतेराज़ से मा फ़ौक़ हैं क्योकि सहाबा भी बशर हैं और उनसे भी ग़लती और भूल चूक होती है, चुनाँचे तारीख़ में यह बात मौजूद है कि उन में बाज़ हज़रात राहे मुस्तक़ीम से दूर हो गये थे, यहाँ तक कि कुछ लोग ख़ुद आँ हज़रत (स) के

दौर में ही आपके रास्ते से दूर हो गये बल्कि कुरआने मजीद ने अपनी बाज़ आयतों और सूरों में जैसे सूरे ए मुनाफ़ेकून, अहज़ाब, हुजरात, तहरीम, फ़त्ह, मुहम्मद और तौबा में इस बात की तसरीह की है।

लिहाज़ा बाज़ सहाबा हज़रात के आमाल पर जायज़ और मुहज़ज़ब अंदाज़ में तंकीद करना हरगिज़ा कुफ़्र का सबब नहीं करार पा सकतास क्योंकि कुफ़्र व ईमान का मेयार वाज़ेह है और उन दोनो का महवर व मर्कज़ रौशन है और वह तौहीद व रिसालत और ज़रुरियाते दीन जैसे वुजूबे नमाज़, रोज़ा, हज, शराब और जुए का हराम होना जैसी चीज़ों को मानना और उसका इंकार करना है, अलबता कलम और ज़बान को बदतमीज़ी और भोन्डी बातों से महफूज़ रखना ज़रूरी है, क्योंकि यह बातें एक मुहज़ज़ब मुसलमान जो सीरते ख़ातिमुन नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स) पर अमल पैरा है उस के लिये ज़ेब नहीं देती, बहरहाल इसके वाबजूद अकसर सहाबा सालेह और मुसलेह थे, जो लायके ऐहतेराम और मुसतहिकके इकराम हैं।

लेकिन इसके बावजूद सहाबा को जरह व तादील (आदिल या ग़ैर आदिल साबित करने) के क़वायद पर इस लिये तौला

जाता है ताकि सही और काबिले ऐतेमाद सुन्नत से वाकिफियत हासिल हो जाये, क्योंकि हम जानते हैं कि रसूले खुदा (स) के जाने के बाद आपकी तरफ बहुत ज़्यादा किज़ब व बोहतान मंसूब है। (जैसा कि यह बात तमाम लोग जानते हैं और खुद रसूल (स) ने इस बात की वाक़े होने की ख़बर भी दी थी) और इस बात के बारे में दोनो तरफ़ के उलामा हज़रात ने भी अहम किताबें लिखी हैं जैसे सुयूती और इब्ने जौज़ी वगैरह, ताकि वह हदीसों जो वाक़ेयन रसूले खुदा (स) से सादिर हुई हैं उनके दरमियान और जो हदीसों गढ़ कर आपकी तरफ़ मंसूब की गई हैं उनके दरमियान इम्तियाज़ पैदा हो सके।

20. शिया, इमाम महदी मुन्तज़र (स) के वुजूद का अक़ीदा रखते हैं, क्यो कि इस बारे में कसीर रिवायात रसूले इस्लाम (स) से नक़ल हुई हैं कि वह औलादे फ़ातेमा (अ) से होंगे और इमाम हुसैन (अ) के नवें बेटे हैं, क्योंकि इमाम हुसैन (अ) के आठवे बेटे (आठवी पुशत) इमाम हसन असकरी (अ) हैं जिन की वफ़ात 260 हिजरी में हुई और आपको खुदा ने सिर्फ़ एक बेटा इनायत किया था जिसका नाम मुहम्मद था चुनाँचे आप ही इमाम मेहदी (अ) हैं जिनकी कुनियत अबुल कासिम है।[6]

आपको मोवस्सक़ मुसलमानों को देखा है और आपकी विलादत, खुसूसियात और इमामत नीज़ आपकी इमामत पर आप के वालिद की तरफ़ से नस्स की ख़बर दी है, आप अपनी विलादत के पाँच साल बाद लोगों की नज़रों से ग़ायब हो गये, क्योंकि दुश्मनों ने आपको क़त्ल करने का इरादा कर लिया था लेकिन खुदा वंदे आलम ने आपको इसलिये बचा कर रखा है ता कि आखिरी ज़माने में अदल व इंसाफ़ पर मबनी इस्लामी हुकूमत कायम करें और ज़मीन को जुल्म व फ़साद से पाक करे दें, जो कि जुल्म व ज़ौर से भरी होगी।

और यह कोई अज़ीब व ग़रीब बात नहीं है कि आपकी उम्र इस क़दर तूलानी कैसी होगी? क्योंकि क़ुरआने मजीद इस वक़्त भी हज़रते ईसा (अ) के ज़िन्दा होने की ख़बर दे रहा है, जबकि उनकी विलादत को 2008 साल हो चुके हैं, इसी तरह हज़रते नूह (अ) अपनी क़ौम में 950 साल ज़िन्दा रहे और अपनी क़ौम को अल्लाह की तरफ़ दावत देते रहे और हज़रते ख़िज़्र (अ) भी अभी तक ज़िन्दा है क्योंकि अल्लाह तआला हर शय पर कादिर है, उसकी मशीयत पूरी होने वाली है, जिसे कोई टाल नहीं सकता। क्या उसने हज़रत युनुस (अ) के बारे में यह नहीं फ़रमाया कि

.....  
(सूर ए साफ़ात आयत 143, 144)

अगर वह तसबीह करने वालों में से न होते तो रोज़े क़यामत तक उसी के पेट में रह जाते।

चुनाँचे अहले सुन्नत के अकसर बुजुर्ग और जलीलुल क़द्र उलामा इमाम मेहदी (अ) की विलादत और उनके वुजूद के कायल हैं और उन्होंने उनके औसाफ़ व वालेदैन के नाम का ज़िक्र किया है जैसे

अ. अब्दिल मोमिन शबलन्जी अपनी किताब नुरुल अबसार फ़ी मनाकिबे आले बैतिन नबीयिल मुख्तार में।

आ. इब्ने हजर हैसमी मक्की शाफ़ेई ने अपनी किताब अस सवाएके मोहरेका में कहते हैं अबुल कासिम मुहम्मह अल हुज्जह की उम्र उनके वालिद की वफ़ात के वक़्त पाँच साल की था कि लेकिन खुदा ने इसी सिन में आपको हिकमत अता की और उनका नाम कायम मुन्तज़र है।

इ. क़न्दूजी हनफ़ी बलख़ी ने अपनी किताब यनाबिउल मवद्दत में इसका तज़िकरा किया है जो दौराने खिलाफ़ते उस्मानिया तुर्की में (आस्ताना) से छपी है।

ई. सैयद मुहम्मद सदीक हसन कनौजी बुखारी ने अपनी किताब अल एजाआ लेमा काना वमा यकूनो बैना यदेईस साआ में इसे लिखा है।

यह हैं मुतकद्देमीने उलामा के अकवाल और मुतअख्खेरीन में से डाक्टर मुस्तफा राफेई ने अपनी किताब इस्लामुना में लिखा है, चुनाँचे जब उन्होने मसअल ए विलादत की बहस की है कि तो बड़ी तूल व तफसील के साथ बहस की है और इस बारे में उन तमाम ऐतेराज़ात और शुबहात के जवाब दिये हैं जो इस मक़ाम पर ज़िक्र किये जाते हैं।

21. जाफिर फिरके वाले लोग नमाज़ पढ़ते हैं, रोज़ा रखते हैं और अपने माल में से ज़कात व ख़ुम्स अदा करते हैं और मक्क ए मुकर्रमा जा कर एक बार बतौरै वाज़िब हज्जे बैतुल्लाहिल हराम करते हैं और इसके अलावा भी मुसतहब हज्ज व उमरा अदा करते रहते हैं और नेकियों की तरफ़ दावत देते हैं और बुराईयों से रोकते हैं, और अवलिया ए ख़ुदा व रसूल से मुहब्बत करते हैं और ख़ुदा व रसूल के दुश्मनों से दुश्मनी करते हैं और अल्लाह की राह में हर उस काफ़िर व मुशरिक से जिहाद करते हैं जो इस्लाम के खिलाफ़ ऐलाने जंग करता हो और उस हाकिम से जंग करते हैं, जो कहर व ग़लबे

के ज़रिये उम्मतें मुसलिमा पर मुसल्लत हो गया हो और दीने इस्लाम (जो दीने हनीफ़ और हक़ है) की मुवाफ़िक़त करते हुए तमाम इक्तेसादा, समाजी और घरेलू कामों और मशग़लों में मसरूफ़ रहते हैं, जैसे तिजारत, इजारा, निकाह, तलाक़, मीरास, तरबीयत व परवरिश, रज़ाअत और हिजाब वगैरह और इस सब चीज़ों के अहकाम को इज्तेहाज के ज़रिये हासिल करते हैं, जिन्हे मुत्तकी और परहेज़गार उलामा, किताब, सही सुन्नत और अहले बैत साबित शुदा हदीसों और अक़ल व इजमा के ज़रिये इस्तिम्बात करते हैं।

22. और शिया अक़ीदा रखते हैं कि तमाम यौमिया फ़रायज़ के अवकात मुअय्यन हैं, और यौमिया नमाज़ के लिये पाँच वक़्त हैं, फ़ज़्र, ज़ोहर, अस्त्र, मग़रिब और एशा और अफ़ज़ल यह है कि हर नमाज़ को उसके मख़सूस वक़्त में अंजाम दिया जाये, मगर यह कि नमाज़े ज़ोहर व अस्त्र और नमाज़े मग़रिब व एशा को जमा करके पढ़ा जा सकता है, क्योकि रसूले खुदा (स) ने किसी उज़्र, मरज़, बारिश और सफ़र के बग़ैर इन दो नमाज़ों को एक साथ पढ़ा था, जैसा कि सही मुस्लिम वगैरह में नक़ल हुआ है, और यह उम्मतें मुस्लिमा की सहूलत के लिये किया गया है, खास तौर से हमारे ज़माने में एक फ़ितरी और आम बात है।



23. शिया भी दूसरे मुसलमानों की तरह अज्ञान देते हैं, अलबत्ता जब जुमल ए हय्या अलल फ़लाह आता है तो उसके बाद हय्या अला खैरिल अमल भी पढ़ते हैं, क्योंकि रसूले खुदा (स) के दौर में यह हिस्सा आज्ञान में कहा जाता था लेकिन बाद में हज़रत उमर ने अपने इज्तेहाद की बेना पर यह इल्लत बताते हुए कि चूँकि इससे मुसलमान जिहाद करने से रुक जायेंगे उसको अज्ञान से हज़फ़ कर दिया, उनका कहना था कि मुसलमान इससे यह समझ बैठेंगे कि नमाज़ ही बेहतरीने अमल है लिहाज़ा जिहाद की तरफ़ फिर कोई रग़बत नही करेगा, इस लिये इसे अज्ञान में हज़फ़ कर दिया जाये तो बेहतर है। जैसा कि अल्लामा कौशजी अशअरी ने अपनी किताब शरहे तजरीदुल ऐतेकाद में और अल मुन्सिफ़ में, कंदी, कंजुल उम्माल में मुत्तकी हिन्दी वगैरह ने इसे नक़ल किया है इस के अलावा उमर ने एक और जुमले का इज़ाफ़ा कर दिया। अस सलातों खैरुन मिन नौम, जबकि यह जुमला रसूले इस्लाम (स) के ज़माने में नहीं था। देखिये, कुतुबे हदीस व तारीख़। जबकि इबादत और उसके मुकद्दमात इस्लाम में शारेअ के अम्र और उसके इज़म पर मौकूफ़ हैं यानी शरीयत में हर अमल के लिये कुरआन और सुन्नत से नस्से खास या नस्से आम मौजूद हो, और अगर किसी अमल की नस्स न हो तो वह अमल मरदुद और बिदअत हैं जिसे उसके अंजाम देने वाले के मुँह पर मार दिया जायेगा, क्योंकि इबादत में किसी

चीज़ की ज़ियादती या कमी मुमकिन नहीं है, बल्कि तमाम शरई उमूर में किसी की ज़ाती राय का कोई दखल नहीं है, अलबत्ता शिया हज़रात जो अशहदो अन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह के बाद अशहदो अन्ना अलीयन वलीयुल्लाह कहते हैं तो यह उन रिवायात की बेना पर है जो रसूले खुदा (स) और अहले बैत (अ) से नक़ल की गई हैं, और उनमें यह तसरीह मौजूद है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह कहीं ज़िक्र नहीं हुआ या बाबे जन्नत पर नहीं लिखा गया मगर उसके साथ अली वलीयुल्लाह ज़रूर था और यह जुमला इस बात की अक्कासी करता है कि शिया अली (अ) को नबी भी नबी समझते चे जाय कि वह आपकी रूबूबियत या उलूहीयत का अल अयाज़ो बिल्लाह अकीदा रखते हों, लिहाज़ा तौहीद व रिसालत की शहादत के बाद तीसरी शहादत (अलीयन वलीयुल्लाह) कहना जायज़ है इस उम्मीद में कि यह भी मतलूबे परवरदिगार हो। अलबत्ता इसको जुज़ और वुजूब के क़स्द से अंजाम न दे, यही शियों के अकसर उलामा का फ़तवा है।

लिहाज़ा यह ज़ियादती बग़ैर क़स्दे जुज़ईयत के अंजाम दी जायेगी, जैसा कि हमने कहा है लिहाज़ा यह ऐसा नहीं है कि शरअ में उसकी कोई अस्ल न हो, इसलिये यह बिदअत है।

24. और शिया जमीन या मिट्टी या कंकड़ के टुकड़ों और पेड़ पौधों वगैरह पर सजदा करते हैं और दरी, कालीन या चादर कपड़े और खाई जाने वाली चीज़ों और ज़ेवरात पर सजदा नहीं होता, क्योंकि इस सिलसिले में बड़ी तादाद में शिया व सुन्नती किताबों में हदीसों मौजूद हैं, क्योंकि रसूले खुदा (स) का तरीका यह था कि आप मिट्टी और ज़मीन पर सजदा करते थे बल्कि आप मुसलमानों को भी यही हुक्म देते थे, चुनाँचे एक दिन जनाबे बेलाल ने अपने अम्मामे की कोर पर जला देने वाली गर्मी से बचने की बेना पर सजदा किया तो रसूल इस्लाम (स) ने बेलाल के अम्मामे को पेशानी से अलग कर दिया और फ़रमाया:

.....

ऐ बेलाल, अपनी पेशानी को ज़मीन पर रखो।

इसी तरह की हदीस सुहैब और रबाह के बारे में नक़ल की गई है, जब आपने फ़रमाया

.....

ऐ सुहैब और ऐ रबाह अपनी पेशानी को ज़मीन पर रखो।

देखिये, सही बुखारी व कंजुल उम्माल या अल मुसन्नफ़,  
तालीफ़ अब्दुल रज़ाक अस सनआनी, या अस सुजूद अलल  
अर्ज़, तालीफ़ काशिफ़ुल ग़िता।

और नबी ए अकरम (स) ने उस जगह यह इरशाद फ़रमाया  
(जैसा कि सही बुखारी वगैरह में आया है)

.....

मेरे लिये ज़मीन को मस्जिद और ताहिर व मुतहहर बनाया  
गया है।

और फिर मिट्टी पर सजदा करना और पेशानी को ज़मीन पर  
रखना यही खुदा के सामने सजदा करने का सबसे मुनासिब  
तरीका है, क्योंकि मअबूद के सामने यही खुशू और खुजू का  
सब से अच्छा तरीका है, इसी तरह खाक पर सजदा करना  
इंसान को उसकी असल्म हकीकत की याद दिलाता है कि वह  
उसी से पैदा हुआ है, क्या खुदा वंदे आलम ने नहीं फ़रमाया:

.....

(सूरए ताहा आयत 55)

< इसी ज़मीन से हमने तुम्हे पैदा किया है और इसी में पलटा कर ले जायेंगे और फिर दोबारा उसी में से निकालेंगे।

बेशक सजदा खुजू की आखिरी हद का नाम है और खुशू की आखिरी मंज़िल मुसल्ले (जानमाज़) फ़र्श, कपड़े और कीमती जवाहर पर सजदा करके हासिल नहीं होती, बल्कि बदल की अशरफ़ तरीन जगह यानी पेशानी को पस्त तरीन जगह यानी मिट्टी पर रखे।[7]

अलबत्ता उस मिट्टी को पाक होना चाहिये, उसी तहारत की ताकीद की बेना पर शिया लोग अपने साथ मिट्टी का ढेला (यानी सजदा गाह वग़ैरह) रखते हैं और बाज़ अवकात यह मिट्टी तबर्क के तौर पर मुकद्दस तरीन जगह से लेते हैं जैसे ज़मीने कर्बला, जिस में फ़रज़ंदे रसूल हजरत इमाम हुसैन (अ) शहीद कर दिये गये, जैसा कि बाज़ सहाबा मक्के के कंकड़ और पत्थर वग़ैरह को सफ़र में सजदे के लिये अपने साथ रखते थे।[8]

अलबत्ता शिया इस पर इसरार नहीं करते हैं और न ही इस चीज़ पर हमेशा ज़रूरी समझते हैं बल्कि वह हर पाक मिट्टी

और पत्थर के ऊपर बिना किसी इशकाल और तरदुद के सजदा करते हैं, जैसे मस्जिदे नबवी और मस्जिदुल हराम के फर्श और वहाँ पर लगे हुए पत्थर।

इसी तरह शिया नमाज़ में अपने दाहिने हाथ को बाये हाथ पर नहीं रखते। (हाथ नहीं बाँधते) क्योंकि रसूले इस्लाम (स) ने नमाज़ में यह काम अंजाम नहीं दिया और यह बात क़तई नस्से सरीह से साबित नहीं है, यही वजह है कि सुन्नी मालिकी हज़रात भी यह फ़ेल अंजाम नहीं देते।[9]

25. शिया फिरका वुजू में दोनो हाथों को ऊपर की तरफ़ से कोहनियों से उँगलियों के सिरे तक धोते हैं और उसके बर ख़िलाफ़ नहीं करते क्योंकि यह तरीका उन्होने अपने इमामों से लिया है और उन्होने उसको अल्लाह के रसूल (स) से लिया है और अहले बैत (अ) अपने जद की बातों को दूसरों से ज़्यादा और बेहतर तरीके से जानते हैं कि उनके जद यह काम कैसे किया करते थे, जैसा कि रसूले ख़ुदा (स) भी इसी तरह अंजाम देते थे और उन्होने आयते वुजू की यह तफ़सीर की है कि इला आयते वुजू में (सूर ए मायदा आयत 6)[10] मअ के मायने में आया है जैसा कि शाफ़ेई सगीर ने अपनी किताब निहायतुल मोहताज में यही ज़िक्र किया है इसी तरह यह लोग

अपने पैरों और सर को धोने के बजाए उनका मस्ह करते हैं,  
जिसका सबब हमने ऊपर ज़िक्र किया है और यही तरीका  
इब्ने अब्बास का था जैसा कि उन्होंने कहा है

.....

वुजू सिर्फ़ दो चीज़ों के धोने और दो चीज़ों के मस्ह करने का  
नाम है।

(देखिये, सुन्न, मसानीद, तफ़सीरे फ़खरे राज़ी आयते वुजू के  
ज़ैल में)

26. शिया कहते हैं कि मुतआ (वक्ती शादी) करना नस्से  
कुरआनी की बेना पर जायज़ है क्योकि खुदा वंदे आलम का  
इरशाद है

.....

(सूर ए निसा आयत 24)

पस जो भी उन औरतों से लज़ज़त हासिल करे उसकी उजरत  
उन्हे बौतौरै फ़रीज़ा अदा करे।

यही वजह है कि तमाम मुसलमान रसूल (स) के ज़माने में  
मुतआ करते थे और तमाम सहाबा अहदे खिलाफ़ते उमर के  
निस्फ़ दौर तक मुतआ करते थे।

क्योंकि मुतआ भी शरई शादी है जो दायमी शादी में नीचे बयान किये जाने वाले अहकाम में मुशतरक है:

1. मुतआ में भी औरत शौहर वाली नहीं होनी चाहिये और सिगों को उसी तरह से पढ़ना ज़रूरी है कि ईजाब औरत की तरफ़ से और क़बूल मर्द की तरफ़ से हो।
2. दायमी शादी की तरह मुतआ में भी औरत को कुछ माल देना ज़रूरी है जिसे दायमी शादी में मेहर कहते हैं और मुतआ में अज़्र कहते हैं जैसा कि कुरआनी नस्स के मुताबिक़ हमने ऊपर ज़िक्र किया है।
3. दायमी शादी की तरह मुतआ में भी मर्द से जुदा होने की सूरत में औरत पर इद्दा गुज़ारना ज़रूरी है।
4. मुतआ में भी मुफ़ारेक़त के बाद औरत पर दायमी निकाह की तरह इद्दा ज़रूरी है। इसी तरह मुतआ से पैदा होने वाली औलाद भी दायमी शादी की तरह मुतआ करने वाले शख्स की औलाद होगी और मुतआ में भी दायमी निकाह की तरह औरत एक मर्द से ज़्यादा से एक वक़्त में मुतआ नहीं कर सकती।



5. मुतआ में दायमी निकाह की तरह बाप और औलाद और औलाद और माँ को एक दूसरे की मीरास मिलेगी।

मुतआ और शादी का फ़र्क नीचे बयान किया जा रहा है:

1. मुतआ में मुद्दत होती है, जबकि शादी में मुद्दत नहीं होती।
2. मुतआ वाली औरत का नफ़का मर्द पर वाजिब नहीं है और औरत मर्द की मीरास नहीं पायेगी।
3. मुतआ करने वाले मर्द और औरत के दरमियान मीरास नहीं होती।
4. मुतआ में तलाक़ की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मुद्दत ख़त्म हो जाने के बाद या दोनों के इत्तेफ़ाक़ से मुद्दत बख़शने के बाद खुद व खुद जुदाई हो जाती है।

इस तरह की शादी का क़ानून होने की चंद हिक़मतें हैं:

1. जायज़ और मशरूत तरीक़े से औरत व मर्द की जिन्सी ज़रूरत का रास्ता फ़राहम करना है ताकि जो लोग बाज़ असबाब की बेना पर दायमी शादी नहीं कर सकते या जो लोग बीवी के मरने के बाद या किसी और सबब की बेना पर औरत से महरूम हो चुके हैं या औरत उन असबाब की बेना पर मर्द से महरूम हो गई हो और यह लोग ज़िन्दगी को शराफ़त और

राहत के साथ गुज़ारना चाहते हों तो मुतआ उन के लिये आसान रास्ता है।

2. मुतआ दर अस्ल समाजी मुश्किलात को हल करने के लिये तशरीअ किया गया है ता कि इस्लामी समाज अखलाकी बुराईयों में मुबतला न हो पाये।

कभी इस मुतआ के ज़रिये इंसान शादी से पहले जायज़ तरीके से एक दूसरे को अच्छी तरह से पहचान सकता है, (जो मुमकिन है आईन्दा के लिये मुफ़ीद और नतीजा बख़्श हो) और उसके बाद इंसान फ़ेअले हराम में मुबतला होने से महफूज़ रहता है, इसी तरह ज़ेना, जिन्सी दबाव और रुसवाई या दूसरे हराम उमूर में मुबतला न हो। जैसा मुश्त ज़नी, क्योकि जो एक बीवी पर सब्र नहीं कर सकता या इक्तेसादी और माली मुश्किल की बेना पर या एक से ज़्यादा औरतों का खर्चा नहीं चला सकता वगैरह वगैरह और वह हराम काम भी नहीं करना चाहता हो तो उसके लिये यह रास्ता आसान है।

बहरहाल यह शादी भी कुरआन और हदीस से मुसतनद है और सहाबा ने एक दूसरे पर एक ज़माने तक अमल किया है, चुनाचे अगर यह शादी ज़ेना शुमार की जाये तो उसका मतलब यह हुआ कि खुदा, रसूल और सहाबा ने ज़ेना को हलाल

समझा और उसके अंजाम देने वाले एक ज़माने तक ज़ेना करते रहे। अल अयाज़ो बिल्लाह।

मज़ीद यह कि इस हुक्म का नख़्स होना भी मालूम नहीं है, क्योंकि इस का नख़्स होना किताब व सुन्नत से साबित नहीं है और न कोई कतई व सरीह दलील इस पर मौजूद है।[11]

बहरहाल शिया इमामिया इस शादी को नस्से कुरआन और सुन्नते रसूल (स) की बेना पर हलाल समझते हैं लेकिन दायमी शादी और घर आबाद करने को तरजीह देते हैं, क्योंकि ऐसी शादी क़वी और सालिम समाज की बुनियाद और असास है और वक्ती शादी की तरफ़ ज़्यादा रग़बत नहीं रखते जिसे शरीयत में मुतआ कहते हैं, अगरचे (जैसा कि हमने पहले कहा कि) यह हलाल और जायज़ हैं।

और इस मक़ाम पर यह ज़िक्र कर देना भी मुनासिब है कि शिया इमामिया (किताब व सुन्नत और तालीम आईम्म ए अहले बैत (अ) पर अमल पैरा होने की बेना पर) औरत के हुक्क का ऐहतेराम करते हैं और उन्हें बड़ी अहमियत देते हैं और औरत के मक़ाम व मर्तबा, उनके हुक्क बिल खुलूस उन के साथ खुश अखलाकी से पेश आने पर मिल्लिकयत, निकाह,

तलाक़, गोद लेने और परवरिश करने, दूध पिलाने जैसे मसायल के साथ साथ, इबादात व मामलात के लिये निहायत आला अहकाम, जो उन के आईम्मा से नक़ल हुए वह सब उन की फ़िक़ह में पाये जाते हैं।

27. शिया जाफ़री फिरके ज़ेना, लवात, सूद खोरी, नफ़से मोहतरमा का क़त्ल, शराब नोशी, जुवा, बलवा व बगावत, मक्र व फ़रेब बाज़ी, धोखाधड़ी, ज़खीरा अंदोज़ी, नाप तोल में कमी करना, ग़स्ब, चोरी, ख़ियानत, कीनह व खोट, रक्स व गेना, इतेहाम, बोहतान, चुगलखोरी, फ़साद फैलाना, मोमिन को अज़ीयत देना, गीबत करना, गाली गलौज, झूठ व इल्ज़ाम और उनके अलावा तमाम गुनाहाने कबीरा व सगीरा को हराम जानते हैं और हमेशा उन गुनाहों से दूर रहते हैं और हत्तल इमकान उन से इजतेनाब करने की कोशिश करते हैं और उनको फैलने से रोकने के लिये हर मुमकिन वसायल बरुये कार लाते हैं जैसे तसनीफ़ व तालीफ़, किताबों की नश्र व इशाअत करना, अखलाकी और तरबीयती रिसाले, मजालिस, इजतेमा और जलसे वगैरह कायम करना या नमाज़े जुमा के खुतबे और दूसरी चीज़ें वगैरह.....।

28. अखलाक्री फ़ज़ायल और मकारिमे अखलाक़ को निहायत अहमियत देते हैं और मौएज़ा वगैरह से इश्क करते हैं और उनके सुनने के लिये दिलचस्वी से हाज़िर होते हैं और उसके लिये अपने घरों, मस्जिदों, पार्कों और मैदानों में जलसे, मजालिस और इजतेमाआत मुनासेबत या गैर मुनासेबत से मुनअक्किद करते हैं. इसी बेना पर अज़ीम फ़वायद व मताल्लिब पर मुश्तमिल वह दुआएं पढ़ते हैं जो इस सिलसिले में रसूले इस्लाम (स) और अहले बैत इस्मत व तहारत (अ) से नक़ल हुई है जैसे दुआए कुमैल, दुआए अबू हमज़ा, दुआएं सेमात, दुआएं जौशने कबीर, दुआएं मकारिमे अखलाक़, दुआएं इफ़तेताह (जो रमज़ान में पढ़ी जाती है) वह उन दुआओं और बुलंद मज़ामीन पर मुश्तमिल मुनाजात को निहायत खुशू व खुजू और एक खास गिरया व ज़ारी के साथ पढ़ते हैं, क्योंकि यह दुआएँ नफ़्स को पाकीज़ा बनाती है और उन के ज़रिये इंसान अल्लाह से करीब होता है।

यह तमाम दुआएँ मौसूअतुल अदईया (मोअजमे अदईया) में जमा की गई हैं, इसी तरह यह कुतुब अदईया में भी मौजूद हैं जो उन के दरमियान रायज हैं।

29. और शिया नबी ए अकरम (स), अहले बैत (अ) और आपकी पाक नस्ल जो जन्नतुल बकीअ और मदीन ए मुनलव्वरा में दफ्न हैं उनकी कब्रों का ऐहतेराम करते हैं, जिन में इमाम हसने मुजतबा (अ), इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ), इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ) और इमाम जाफ़र (अ) हैं।

और नजफ़े अशरफ़ में इमामे अली (अ) का मज़ार है और करबला में इमाम हुसैन (अ) और आपके भाई, आपकी औलाद और आपके चचा की औलाद और आपके असहाब व अंसार (जो आप के साथ यौमे आशूरा शहीद हुए थे) के कब्रें हैं।

और सामर्रा में इमाम अली नक़ी (अ) और माम हसन असकरी (अ) के रौज़े हैं और काज़मैन में इमाम मुहम्मद तक़ी (अ) और इमाम मूसा काज़िम के रौज़े हैं जो सबके सब इराक़ में हैं और ईरान के शहर मशहद में इमाम अली रज़ा (अ) का रौज़ा है और कुम व शीराज़ (ईरान) में उन इमामों के बेटों और बेटियों के रौज़े हैं और दमिश्क़ (सीरिया) में करबला की शेर दिल खातून जनाब सैय्यद ए ज़ैनब (अ) का रौज़ा है और काहिरा (मिस्र) में सैय्यदा नफ़ीसा का रौज़ा है। (यह भी करीम ए अहले बैत (अ) हैं।)

बहरहाल उन तमाम रौजों और मजारों का ऐहतेराम करना रसूल (स) के पास व लिहाज़ की बेना पर है, क्योकि हर शख्स अपनी औलाद में बाकी और महफूज़ रहता है और किसी की औलाद का ऐहतेराम करना खुद उसका ऐहतेराम करने के बराबर है जैसा कि कुरआने करीम ने आले इमरान, आले यासीन, आले इब्राहीम और आले याकूब की मदह फ़रमाई है और उनकी क़द्र व मंज़िलत की बुलंद करार दिया है हालाँकि उन में से बाज़ नबी भी नही थे।

.....

यह एक नस्ल है जिस में एक का सिलसिला एक से है।

(सूर ए आले इमरान आयत 34)

इसी लिये कुरआने मजीद ने उन पर ऐतेराज़ नही किया, जिन लोगोँ ने यह कहा था:

.....

(सूर ए कहफ़ आयत 21)

उन्होंने कहा कि हम उन पर मस्जिद बनायेगें।

यानी हम असहाबे कहफ़ के रौज़ों पर मस्जिद बनायेगें ता कि उनके पास खुदा की इबादत की जाये और अल्लाह ने उनके अमल को शिर्क नही कहा, क्योकि मुसलमान मोमिन सिर्फ़ अल्लाह ही के लिये रूकू, सजदा और इबादत करता है और वह उन पाक व मुतहहर अवलिया की ज़रीह के करीब सिर्फ़ इस लिये जाता है क्योकि उन अवलिया की वजह से वह मकान मुकद्दस हो गया है जैसे इब्राहीम (अ) की बेना पर मकामे इब्राहीम की क़दासत व करामत हासिल है, जैसा कि खुदा वंदे आलम फ़रमाता है:

.....

और हुक्म दे दिया कि मक़ामे इब्राहीम को मुसल्ला बनाओ।

(सूर ए बकरह आयत 125)

पस जो शख्स मक़ामे इब्राहीम के पीछे नमाज़ पढ़े तो वह ऐसा नही है कि वह मक़ामे इब्राहीम की इबादत करता है या जो सफ़ा व मरवा के दरमियान सई करता है वह उन्हे अल्लाह समझ कर नही आया है कि वह उन दोनो पहाड़ों की इबादत कर रहा हो बल्कि यह इस लिये है कि अल्लाह ने उनके अपनी इबादत के लिये मुबारक व मुकद्दस जगह करार



दिया है, नतीजतन वह भी आखिर में अल्लाह की तरफ़ मंसूब हैं बेशक मुअय्यन दिन और जगहें मुकद्दस हैं जैसे अरफ़े का दिन, मेना व अरफ़ात का मैदान और उनका कदासत की वजह उनका अल्लाह की तरफ़ मंसूब होना है।

30. इसी सबब की बेना पर शिया भी (दीगर मुसलमानों की तरह) शाने रसूले अकरम (स) व आले रसूल के मुहाफ़िज़ और उसका इदराक करने वाले हैं। अहले बैत (अ) के मुबारक रौज़ों की बड़े ऐहतेमाम से ज़ियारत करते हैं ता कि उससे उन की तकरीम हो और उन से इबरत हासिल करें और उनके साथ अहद को ताज़ा करें और उस अक़दार की मज़ीद पाबंदी करें जिस के लिये उन्होने जिहाद किया और उसी की हिफ़ाज़त के लिये शहीद हो गये, क्योकि उन मशाहिदे मुकद्देसा की ज़ियारत करने वाले अपने ज़ियारतों में अहले क़ब्र के फ़ज़ायल और उनके जिहाद ही का ज़िक्र करते हैं या उन्होने जो नमाज़ें क़ायम कीं और ज़कात अदा की उसका तज़क़िरा करते हैं, नीज़ उन्होने उस राह में जो परेशानियाँ और मुसीबतें उठाई हैं उन को बयान करते हैं जैसा कि रसूले इस्लाम (स) को अपनी मज़लूम नस्ल से जो दिसचस्बी थी उसकी वजह से आपने भी उन का ग़म मनाया है जैसा कि

जनाबे हमज़ा की शहादत पर आँ हज़रत (स) ने फ़रमाया:

हाय हमज़ा पर कोई रोने वाला नहीं? जैसा कि तारीख और सीरत की किताबों में नक़ल किया गया है।

क्या रसूले ख़ुदा (स) ने अपने अज़ीज़ बेटे इब्राहीम की मौत पर गिरया नहीं किया? क्या आप बक़ीअ में क़ब्रों की ज़ियारत करने नहीं जाते थे? क्या आपने यह नहीं फ़रमाया:

.....[12]

क़ब्रों की ज़ियारत करो क्योंकि उनकी ज़ियारत तुम्हे आख़िरत की याद दिलाती है।

बेशक आईम्म ए अहले बैत (अ) की क़ब्रों की ज़ियारत और उनकी सीरते तय्यबा और राहे ख़ुदा में उनके जिहादी कारनामे आईन्दा नस्ल को उन अज़ीम क़ुरबानियों की याद दिलाता है जो उन ज़वाते मुक़द्दसा ने इस्लाम व मुसलेमीन के रास्ते में पेश की हैं, उससे उनके अंदर राहे ख़ुदा में शहादत, शुजाअत व जवाँ मर्दी और ईसार व कुर्बानी की रुह बेदार होती है।

बेशक यह अमल इंसानियत, तहज़ीब व तमददुन और अक़ल के ऐन मुताबिक़ अमल है, क्योंकि उम्मतेँ अपने बुजुर्गों और तहज़ीब व तमददुन के बानियों को हमेशा ज़िन्दा रखती हैं और उनसे मरबूत तारीखों को बहर सूरत और हर हाल में

बाक़ी रखने की कोशिश करती हैं, क्योकि यह उनकी इज़्ज़त और इफ़तेखार का बाइस होती हैं और उनके ज़रिये उम्मतों का रुजहान उनकी अक़दार के बारे में और उनकी अहमियत के बारे में और ज़्यादा होता है।

यही वह चीज़ है जिसे कुरआने मजीद ने चाहा है जब उसने अपनी आयात में अंबिया, अवलिया, सालेहीन और उनके हालात का बड़े ऐबतेमाम से साथ तज़क़िरा किया है।

31. शिया रसूले अकरम (स) और उनकी पाक आल से शिफ़ाअत तलब करते हैं और उनको खुदा की बारगाह में अपने गुनाहों की बख़िशिश, तलबे हाजात और मरीज़ों की शिफ़ायाबी के लिये वसीला करार देते हैं क्योकि कुरआने मजीद ने इस बात को न सिर्फ़ यह कि बेहतर करार दिया है बल्कि उसने इसकी तरफ़ वाज़ेह अंदाज़ में दावत दी है:

.....

(सूर ए निसा आयत 64)

और काश जब उन लोगों ने अपने नफ़्स पर जुल्म किया था तो आपके पास आते और खुद भी गुनाहों के लिये इस्तिफ़ार करते और रसूल (स) भी उनके हक़ में इस्तिग़फ़ार करते तो यह खुदा को बड़ा ही तौबा करने वाला और मेहरबान पाते।

या यह फ़रमाया:

.....

(सूर ए जुहा आयत 5)

और अनक़रीब तुम्हारा परवर दिगार तुम्हे इस क़दर अता करेगा कि तुम खुश हो जाओ।

और इससे मुराद मक़ामे शिफ़ाअत है।

यह बात कैसे माकूल है कि एक जानिब रसूले अकरम (स) को खुदा गुनाहगारों की शिफ़ाअत के लिये मक़ामे शिफ़ाअत और साहिबाने हाजात के लिये मक़ामे वसीला इनायत फ़रमा दे और दूसरी तरफ़ लोगों को मना फ़रमाएं कि उनसे शिफ़ाअत तलब न करें? या नबी ए अकरम (स) पर हराम क़रार दे दिया कि आप इस मक़ाम से कोई इस्तेफ़ादा न करें।

क्या ख़ुदा ने औलादे याकूब का यह क्रिस्सा ज़िक्र नहीं  
फ़रमाया है कि जब उन्होंने अपने वालिद से शिफ़ाअत तलब  
की और इस तरह कहा:

.....

(सूर ए युसुफ़ आयत 97)

बाबा जान अब आप हमारे गुनाहों के लिये इस्तिग़फ़ार करें  
हम यक़ीनन ख़ताकार थे।

तो मासूम और करीम नबी (स) ने उन पर कोई ऐतेराज़ नहीं  
किया बल्कि उन से यह फ़रमाया:

.....

(सूर ए युसुफ़ आयत 98)

यह दावा कोई नहीं कर सकता कि नबी (स) और आईम्मा  
(अ) मर गये हैं लिहाज़ा उन से दुआ तलब करना मुफ़ीद  
नहीं? क्योंकि अंबिया ख़ासाने ख़ुदा ज़िन्दा रहते हैं ख़ास तौर

पर हज़रत मुहम्मद मुसतफ़ा (स) जिन के बारे में खुदा ने  
इरशाद फ़रमाया:

.....

(सूर ए बकरह आयत 143)

और और हमने तुम को दरमियानी उम्मत करार दिया है ता  
कि तुम लोगों के आमाल के गवाह हो और पैग़म्बर तुम्हारे  
आमाल के गवाह रहें।

इस आयत में शहीदन के मअना शाहिद के हैं।

और दूसरी जगह फ़रमाया:

.....

(सूर ए तौबा आयत 105)

और ऐ पैग़म्बर कह दीजिये कि तुम लोग अमल करते रहो  
कि तुम्हारे अमल को अल्लाह, रसूल और साहिबाने ईमान सब  
देख रहे हैं।

यह आयतें रोज़े क़यामत तक चाँद, सूरज, और रात व दिन  
जारी व सारी रहेंगी, लिहाज़ा रसूले इस्लाम (स) और आपकी  
पाक आल (अ) लोगों पर गवाह हैं और शोहदा ज़िन्दा हैं जैसा

कि खुदा वंदे आलम ने अपनी अज़ीज़ किताब में एक बार नहीं कई बार ज़िक्र किया है।

32. शिया जाफ़री फिरका नबी (स) और आईम्मा (अ) की विलादत पर महफ़िल और खुशी के प्रोग्राम करते हैं और उनकी वफ़ात पर मातम व अज़ा करते हैं और उन प्रोग्रामों में उन के फ़ज़ायल और मनाक़िब और उनकी हिदायत बख़्श सीरत व किरदार का ज़िक्र करते हैं, जो सही नक़ल के ज़रिये उन तक पहुँची है और यह सब कुरआन की इत्तेबाअ में करते हैं क्योंकि कुरआने करीम ने बार बार नबी ए अकरम (स) और दूसरे नबियों के मनाक़िब ज़िक्र किये हैं और उन्हे सराहा है और तमाम लोगों के ज़हनों को तास्सी, इक्तेदा, इबरत और हिदायत हासिल करने की खातिर उसकी तरफ़ मुतवज्जे किया है।

शिया उन महफ़िलों में हराम अफ़आल अंजाम देने से परहेज़ करते हैं जैसे औरत और मर्दों का एक जगह जमा होना, हराम चीज़ों का उन महफ़िलों में खाना पीना और मदह व सना में हद से आगे बढ़ जाना।[13]

या इसी किस्म के दूसरे नामुनासिब अफ़आल अंजाम देना जो रूहे शरीयत के खिलाफ़ हैं और उन में शरई मुसल्लम हुदुद का ख़्याल न रखा जाये या ऐसी चीज़ जिसके लिये कुरआन और सही हदीस की ताईद न हो या किताब व सुन्नत से इस्तिम्बात किया हुआ कोई कुल्ली कायदा सादिक न आता हो।

33.शिया जाफ़री फिरका ऐसी किताबों से इस्तेफ़ादा करता है जो नबी ए अकरम (स) और अहले बैत इस्मत व तहारत (अ) की हदीसों पर मुश्तमिल है जैसे अल काफ़ी तालीफ़ सिक़तुल इस्लाम शेख़ कुलैनी, मन ला यहज़ोरोहुल फ़कीह तालीफ़ शेख़ सदूक़ और अल इस्तिबसार व तहज़ीब तालीफ़ शेख़ तूसी, उनके यहाँ यह हदीस की अहम किताबें हैं।

यह किताबें अगरचे सही हदीसों पर मुश्तमिल हैं लेकिन न उनके मुवल्लेफ़ीन व मुसन्नेफ़ीन और न ही शिया फिरका उन तमाम हदीसों को सही करार देता है। यही वजह है कि शिया फ़ोक़हा उनकी तमाम हदीसों को सही नहीं जानते बल्कि वह सिर्फ़ उन्हीं हदीसों को क़बूल करते हैं जो उनके नज़दीक़ शरायते सेहत पर ख़री उतरती हों, जो इल्मे दिराया, रेजाल और क़वानीने हदीस पर पूरी नहीं उतरती हैं उन को तर्क कर देते हैं।



34. इसी तरीके से शिया (अक़ायद, फ़िक़ह और दुआ व अख़लाक के मैदान में) दूसरी किताबों से इस्तेफ़ादा करते हैं। जिन में आईम्मा (अ) से मुख्तलिफ़ किस्म की हदीसों नक़ल की गई हैं जैसे नहजुल बलागा जिसे सैयद रज़ी ने तालीफ़ किया है और उसमें इमाम अली (अ) के ख़ुतबे, ख़ुतूत और हिकमत आमेज़ मुख्तसर कलेमात मौजूद हैं और इसी तरह इमाम ज़ैनुल आबेदीन अली बिन हुसैन का रिसाल ए हुकूक और सहीफ़ ए सज्जादिया या इमाम अली (अ) का सहीफ़ ए अलविया और दीगर किताबें जैसे उयूने अख़बारे रज़ा, अत तौहीद, एललुश शरायेअ और मआनिल अख़बार तालीफ़ शेख़ सदूक वगैरह।

35. शिया जाफ़री फिरका बाज़ अवकात पैग़म्बरे इस्लाम (स) की उन सही हदीसों से भी बिना किसी तास्सुब व कीनह व नख़वत व तकब्बुर के इसतेनाद करता है जो अहले सुन्नत वल जमाअत[14] भाईयों की किताबों में मुख्तलिफ़ मक़ामात पर नक़ल की गई हैं, जिसकी गवाह शियों की वह क़दीम व जदीद किताबें हैं, जिनमें सहाब ए केराम, नबी (स) की बीवियाँ, रसूल के मशहूर सहाबा और अकाबिर रावियों से नक़ल हुई हैं जैसे अबू

हुँरैरा, अनस वगैरह, अलबता एक शर्त के साथ वह यह कि कुरआने मजीद और दीगर सही हदीस से मुतआरिज़ न हो और न ही अक्ले मोहकम (सालिम) और इजामा ए उलामा के खिलाफ़ न हो।

36. शिया अक़ीदा रखते हैं कि मुसलमानों को दौरे क़दीम व जदीद में जिन मुशिकलात, जानी या माली नुकसान का सामना करना पड़ा है, वह सिर्फ़ दो चीज़ों का नतीजा है:

1. अहले बैत (अ) को भूला देना जब कि वह दर हक़ीक़त क़यादत की लियाक़त और सलाहियत रखते थे, इसी तरह उनके इरशादात व तालीमात को भूला देना, बिल खुसूस कुरआने मजीद की तफ़सीर उन से हट कर बयान करना।

2. इस्लामी फिरक़ों और मज़हिब के दरमियान इख़्तिलाफ़, तफ़रका और लड़ाई झगड़े।

यही वजह है कि शिया फिरक़ा हमेशा मिल्लते इस्लामिया की सफ़ों के दरमियान इतेहाद कायम करने की दावत देता है और

तमाम लोगों की तरफ़ प्यार व दोस्ती और भाई चारगी का हाथ बढ़ाता है और उसके साथ साथ उन फिरकों व मज़ाहिब के अहकाम और उनके नज़रियात और उनके उलामा के इज्तेहाद का भी ऐहतेराम करता है।

चुनाँचे इस रास्ते में शिया जाफ़री फ़ोक़हा इब्तेदाई सदियों से ही अपनी फ़िक़ही, तफ़सीरी और कलामी किताबों में ग़ैर शिया फ़ोक़हा के नज़रियात का ज़िक़र करते आये हैं जैसे शेख तूसी किताब फ़िक़ह में अल ख़िलाफ़, शेख तबरसी की किताब तफ़सीर में मजमउल बयान जिनकी तारीफ़ अल अज़हर युनिवर्सिटी के बुजुर्ग उलामा ने की है।

या इल्मे कलाम नसीरुद्दीन तूसी की किताब तजरीदुल ऐतेकाद, जिस की तशरीह आलिमे अहले सुन्नत अलाउद्दीन कौशजी अशअरी ने की है।

37. शिया जाफ़री फ़िक़हे के बुजुर्ग उलामा तमाम इस्लामी मुख्तलिफ़ मज़ाहिब के उलामा के दरमियान फ़िक़ह, अक्रायद और तारीखी मौज़ूआत में गुफ़तुगू और तबादल ए ख़्याल की ज़रूरत पर ज़ोर देते हैं और दौरे हाज़िर के मुसलमानों के मसायल के दरमियान तफ़ाहुम की ताकीद करते हैं और तोहमत

व इतेहाम के तीरों और दुश्नाम बाज़ी से फ़ज़ा को ज़हर आलूद करने से हतल इमकान इज्तेनाब करते हैं ता कि इस्लामी मिल्लत के दरमियान जो फ़ासला मौजूद है और उसकी वजह से वह मुतअद्दिद हिस्सों में बटी हुई है, उसमें एक मंतिकी कुरबत की फ़ज़ा हमवार हो, ताकि इस्लाम और मुसलमानों के दुश्मनों का रास्ता बंद हो जाये, जो हमारे दरमियान ऐसी दरारों की खोज में रहते जिनके ज़रिये वह बग़ैर किसी इस्तिसना के तमाम मुसलमानों को नुक़सान पहुचा सकें।

और इसी वजह से शिया फिरका किसी भी अहले किबला (मुसलमान) को काफ़िर नहीं कहता। क्योकि शियों का फ़िक्रही मज़हब और उनका अक़ीदा यह है कि काफ़िर वह होता है जिसके कुफ़्र पर तमाम मुसलमानों का इजमा हो। शिया अहले किबला से दुश्मनी नहीं करते और न उन क़हर व ग़लबा और ज़ब्र व इकराह पसंद करते हैं और शिया तमाम इस्लामी फिरकों और मज़ाहिब के उलामा के इज्तेहाद का ऐहतेराम करते हैं और जो शख्स किसी दूसरे मज़हब से शिया मज़हब में आया है उसके तमाम आमाल को मुस्किते तकलीफ़ और उसे बरीउज़ ज़िम्मा समझते हैं, क्योकि जब उसने अपने मज़हब के मुताबिक़ नमाज़, रोज़े, हज्ज, ज़कात, निकाह, तलाक़ और खरीद व फ़रोख़्त जैसे उमूर अंजाम दिये लिहाज़ा गुज़श्ता फ़रायज़ की क़ज़ा वाजिब नहीं है। इसी तरह उसके लिये तजदीदे निकाह व तलाक़ वाजिब

नहीं है अलबत्ता शर्त यह है कि मज़हब के मुताबिक़ जारी हुए हों।

इसी तरह अपने मुसलमान भाईयों के साथ बिल्कुल उसी तरह रहते हैं जैसे कि अगर वह उनके भाई या रिश्तेदार होते तो उस वक़्त भी उन के साथ ऐसे ही रहते।

लेकिन शिया इस्तेमारी फिरकों की ताईद व तसदीक़ नहीं करते हैं जैसे बहाईयत, बाबीईयत और कादयानी या इसके मानिन्द दूसरे फिरके बल्कि शिया उनकी मुखालेफ़त करते हैं और उनसे मुहारेबा करते हैं और उन से हर क्रिस्म के राबते को हराम करार देते हैं।

शिया (बाज़ अवकात न कि हमेशा) तक्रय्या करते हैं जिसका मतलब यह है कि अपने मज़हब और अक़ीदे को (किसी सबब की बेना पर) पोशिदा किया जाये और यह तक्रय्या नस्से कुरआनी के मुताबिक़ एक जायज़ अम्र है और इस पर तमाम इस्लामी मज़ाहब अमल करते हैं अलबत्ता जब किसी दुश्मन के दरमियान फ़ँस जायें। (और इज़हारे अक़ीदे की सूरत में यक़ीनी तौर पर ख़तरा मौजूद हो) तो तक्रय्या किया जा सकता है और यह दो सबब की बेना पर होता है:

1. अपनी जान की हिफाज़त की खातिर ता कि उस का खून बेकार न बह जाये।

2. मुसलमानों का इतेहाद बाक़ी रहे और उन के दरमियान इख़्तिलाफ़ व इफ़तेराक़ पैदा न हो।

38. शिया फिरका समझता है कि आज मुसलमानों के पीछे रह जाने का सबब फ़िक्री, सकाफ़ती, इल्मी और टेकनाँलाजी के मैदान में उनका आपस में इख़्तिलाफ़ व तफ़रका है और इसका इलाज यह है कि खुद मुसलमान मर्दों और औरतों के शऊर को बुलंद किया जाये और उनकी फ़िक्री, सकाफ़ती और इल्मी सतह की तरक्की के लिये इल्मी मराकिज़ बनाये जाएँ। जैसे युनिवर्सिटियाँ, मदरसे, इदारे और जदीद उलूम के नतायज व तजरूबात से इक्तेसादी आबाद कारी, सनअत व हिरफ़त की मुश्किलात को दूर किया और मुसलमानों को मैदाने अमल और खुशहाल जिन्दगी की सरगर्मियों में लाने कि लिये उनके दरमियान इतमिनान व ऐतेमाद की फ़ज़ा कायम की जाये ता कि उनमें इस्तिक़लाल और खुद ऐतेमादी पैदा हो सके और दूसरों की खुशामद और उनकी इतेबा से महफूज़ रहें। इसी लिये शिया हज़रात जहाँ से भी गुज़रे और जिस तरह भी रहे वहाँ उन्होंने इल्मी व तालीमी मरकज़ों की बुनियाद रखी और मुख्तलिफ़ इल्मी मैदानों में उनके माहिरीन की तरबीयत के लिये इदारे

कायम किये। इसी तरह उन्होंने मुल्क और शहर की युनिवर्सिटियों और दीनी मदरसों में दाखिले लिये। जिसके नतीजे में वहाँ से ज़िन्दगी के हर शोअबे में आला दर्जे के उलामा और अहले फ़न तालीम से फ़ारिग हुए और जिसके बाद उन्होंने बा कायदा इल्मी मरकज़ों तक रसाई हासिल की और काबिले क़द्र खदमात छोड़ीं।

39. शिया फिरके अपने उलामा और फ़ोकहा से तकलीद के ज़रिये हमेशा राबते में रहता है, इस लिये कि वह अपने फ़िक़ही मुश्किलात में उन उलामा की तरफ़ रूजू करते हैं और अपनी ज़िन्दगी के तमाम मसायल में उन उलामा की राय पर अमल करते हैं, क्योकि फ़ोकहा (उनके अक़ीदे के मुताबिक़) आखिरी इमाम के वकील हैं और उसके आम नायब हैं। यही वजह है कि हमारे उलामा अपने उमूर मआश व इक्तेसाद में सरकारी हुकूमतों पर अपना दारोमदार नहीं रखते, इसी तरह उनके उलामा हज़रात इस अज़ीम फिरके के अफ़राद के दरमियान वसाक़त और ऐतेमाद के अज़ीम और आली मर्तबा पर फ़ायज़ होते हैं।

और इस फिरके के दीनी इल्मी मदारिस (जो उलामा साजी के मराकिज़ हैं) खुम्स व ज़कात के अमवाल से अपनी इक्तेसादी हाजात को पूरा करते हैं, जिन्हे लोग अपने दिली मैल व रग़बत के साथ फ़ोक़हा के हवाले करते हैं और उसे नमाज़, रोज़े की तरह एक शरई वज़ीफ़ा समझते हैं।

और शिया इमामिया के नज़दीक अपनी दर आमद के मुनाफ़े (बजट) से खुम्स निकालना वाजिब है, जिस पर वाज़ेह दलीलें मौजूद हैं और इस बारे में कुछ रिवायात सेहाह और सोनन में भी नक़ल हुई हैं।[15]

40. शिया इमामिया फिरका अक़ीदा रखता है कि मुसलमानों का हक़ है कि उन इस्लामी हुकूमतों से फ़ायदा उठायें, जो किताब व सुन्नत के मुताबिक़ अमल करती हैं और मुसलमानों के हुकूक की हिफ़ाज़त करती हैं और दूसरी हुकूमतों से मुनासिब और मुसालेमत आमेज़ में राबता कायम करती हैं और अपनी सरहदों की हिफ़ाज़त करती हैं और मुसलमानों के सकाफ़ती, इक्तेसादी और सियासी इस्तिक़लाल के लिये कोशिश करती रहती हैं ता



कि मुसलमान बा ईज़ज़त रह सकें। जैसा कि अल्लाह तआला ने चाहा है:

.....

और ईज़ज़त सिर्फ़ खुदा और उसके रसूल और मोमिनीन के लिये हैं।

(सूर ए मुनाफ़ेकून आयत 8)

और खुदा ने फ़रमाया:

.....

खबरदार सुस्ती न करना और मुसीबत पर ग़मगीन न होना अगर तुम साहिबाने ईमान हो।

(सूर ए आले इमरान आयत 139)

और शिया अक़ीदा रखते हैं कि इस्लाम (क्योकि वह कामिल और जामेअ दीन है इस लिये) के पास हुक्मती निज़ाम से मुतअल्लिक एक दक्कीक राह व रविश और दस्तुरुल अमल मौजूद है, लिहाज़ा अज़ीम इस्लामी मिल्लत के उलामा पर लाज़िम है कि वह इस कामिल निज़ाम को अमली जामा पहनाने के लिये एक साथ बैठ कर बात चीत और गुफ़्तुगू करें ता कि इस उम्मत

को परेशान हाली और सरगरदानी और कभी न तमाम होने वाली मुश्किलात से बाहर निकालें और अल्लाह ही नासिर व मददगार है।

.....

अगर तुम ने खुदा की मदद की तो खुदा तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हे साबित कदम रखेगा।

(सूर ए मुहम्मद आयत 7)

यह शिया इमामिया (जिसे जाफरी फिरका भी कहा जाता है) के हकीकी और वाकई अकायद और उनकी शरीयत के अहम खद व खाल थे जिन्हे मैने आपक सामने बिल्कुल वाज़ेह और रौशन इबारत में पेश कर दिया है।

इस फिरके के लोग इस वक़्त अपने दीगर मुसलमान भाईयों और बहनों के साथ तमाम इस्लामी मुल्कों में ज़िन्दगी बसर करते हैं और मुसलमानों की ईज़ज़त व आबरु और उनके समाज व मुआशरे की हिफाज़त के लिये हरीस हैं और इस राह में अपनी जान व माल और शख्सियत तक को कुर्बान करने क लिये तैयार रहते हैं।

[1]. देखिये मुहम्मद सद्र की किताब तासीसुश शिया लेउलूमिल इस्लाम, अज़ ज़रिया एला तसानिफ़िश शिया जिल्द 29 तालीफ़ आगा बुजुर्ग तेहरानी, कशफ़ुज़ जुनुन तालीफ़ आफ़ंदी, मोज़मुल मुअल्लेफ़ीन तालीफ़ उमर रज़ा कुहाला, आयानुश शिया तालीफ़ मोहसिन अमीन आमूली वग़ैरह।

[2]. तारीख़े कुरआन, अत तमहीद फ़ी उलूमिल कुरआन, तालीफ़ मुहम्मद हादी मारेफ़त वग़ैरह।

[3]. (.....) (सूर ए मायदा आयत 67), यह आयत भी इस सिलसिले में नाज़िल हुई। (.....) (सूरए मायदा आयत 3), (.....) (सूर ए मायदा आयत 3) (.....) (सूर ए मआरिज आयत 2)

[4]. खुलाफ़ाउन नबी, तालीफ़ हायरी बहरानी।

[5]. बित तहकीक़ अरब व अजम के (ग़ैर शिया) मुमताज़ शायरों ने ऐसे मुफ़स्सल क़सीदे कहे हैं जिन में बारह इमामों के

मुकम्मल नाम मज़कूर हैं जैसे उन शायरों में हसकफ़ी, इब्ने तूलून, फ़ज़ल बिन रोज़बहान, जामी, अतार नैशापुरी, मौलवी के कसीदे, यह सब मज़हबे इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम शाफ़ेई वग़ैरह के पैरों हैं, हम यहाँ पर नमूने के तौर पर उन में से दो कसीदे ज़िक्र कर रहे हैं।

पहला कसीदा जनाब हसकफ़ी हनफ़ी का है जिनका शुमार छटी सदी हिजरी के उलामा में से होता है कहते हैं

.....

अव्वल (इमाम अली) हैदर और उनके बाद उनके बेटे इमाम हसन और इमाम हुसैन हैं।

.....

उसके बाद जाफ़र सादिक और उनके बेटे इमाम मूसा काज़िम हैं और उनके बाद सैयद व सरदार अली है।

.....

जिन्हे इमाम रज़ा के नाम से जाना जाता है, आपके बाद आपके बेटे मुहम्मद (तकी) फिर अली, और उनके सच्चे बेटे

.....

यानी हसन (असकरी) हैं और उनके फ़ौरन बाद आपके बेटे इमाम मुहम्मद (महदी आखिरुज़ ज़मान) है, उन्ही हज़रात के बारे में अक़ीदा रखती है

.....

एक क़ौम यही मेरे इमाम और सरदार हैं जिन के असमा बाहम ऐसे मिले हुए हैं जिन में से किसी एक को भी छोड़ा नह जा सकता।

.....

वह अल्लाह के बंदों पर उसकी हुज्जत हैं और वह उस तक पहुंचने का रास्ता और मक़सद हैं।

.....

वह दिनों में अपने रब के लिये रोज़े रखते हैं, रात की तारिकियों में रुकू व सजदे में मशगूल रहते हैं।

दूसरी क़सीदा जनाब शमसुद्दीन मुहम्मद बिन तूलून का है जिनका शुमार दसवी सदी हिजरी के उलामा में होता है वह कहते हैं:

.....

तुम बारह इमामों से वाबस्ता रहो जो कि मुस्तफ़ा ख़ैरुल बशर की आल हैं।

.....

अबू तुराब (अली) हसन, हुसैन और जैनुल आबेदीन का बुग्ज़ बुरा है।

.....

मुहम्मद बाकिर जिन्होंने इल्म के कितने ही बाब खोले और सादिक हैं जिन्हे जाफ़र के नाम से दुनिया में पुकारो।

.....

मूसा जो कि काज़िम हैं और उनके बेटे अली जिन का लक़ब रज़ा है और उनकी क़द्र व मंज़िलत बुलंद हैं।

.....

मुहम्मद तकी हैं जिनका दिल असरारे इलाही से मामूर है और अली नकी हैं जिनकी खूबियाँ चारों तरफ़ फैली हुई हैं।

.....

और हसन असकरी पाक व पाकीज़ा हैं और इमाम मुहम्मद मेहदी हैं जो जल्दी ही ज़ाहिर होंगे।

देखिये किताब अल आईम्मतो इसना अशर मुअल्लिफ़ मुवरिखे दमिशक़ शमसुद्दीन मुहम्मद बिन तूलून वफ़ात (953 हिजरी क़मरी)

तहकीक़ डाक्टर सलाहुद्दीन अल मुन्जिद, मतबूआ बैरुत लेबनान।

[6]. आम्मा की सिहाहे सिता और उनके अलावा दूसरी किताबों में मौजूद है नबी ए अकरम (स) ने फरमाया .....

आखिरी ज़माने में मेरी नस्ल में एक शख्स जाहिर होगा जिसका नाम मेरा नाम होगा और उसकी कुनियत मेरी कुनियत होगी, वह ज़मीन को अदल व इंसाफ़ से उसी तरह से भर देगा जैसे वह जुल्म व जौर से भरी होगी।

[7]. देखिये, अल मुसन्नफ़, सनआनी।

[8]. देखिये, अल यवाकीत वल जवाहर, शअरानी अंसारी मिस्री, जो दसवीं सदी हिजरी के उलामा में से हैं।

[9]. देखिये, सही बुखारी, सही मुस्लिम, सोनने बहीकी।

[10]. मालिकियों की राय जानने के लिये देखिये, बिदायतुल मुजतहिद तालीफ़, इब्ने रुश्दे कुरतुबी।

[11]. इस सिलसिले में उन तमाम हदीसों की तरफ़ रूजू किया जाये जो मुख्तलिफ़ इस्लामी मज़ाहिब की कुतुबे सेहाह, सोनन और मोतबर मसानीद में नक़ल की गई हैं।

[12]. सबकी शाफेई की किताब शिफ़ाउ सेक़ाम पेज 107 पर और इसी की तरह सोनन इब्ने माजा में जिल्द 1 पेज 117 में नक़ल हुआ है।

[13]. गुलू का मतलब यह है कि किसी इंसान को उलूहियत या रुबूबियत का दर्जा दे दें या यह अक़ीदा रखे कि यह किसी काम के अंजाम देने में मशीयते इलाही या इज़्ने खुदा के बग़ैर उसे अंजाम देता है जैसा कि यहूद व नसारा अंबिया के बारे में ऐसा अक़ीदा रखते हैं।न

[14]. यहाँ पर इस बात पर तवज्जो करना ज़रूरी है कि शिआ इमामिया भी अहले सुन्नत हैं क्योकि शिया ही जो कुछ सुन्नते नबवी (स0 में वारिद हुआ है उसे क़ौलन व अमलन तसलीम करते हैं और उन में वह वसीयतें हैं जो रसूल (स) ने अहले बैत (अ) के हक़ में कीं और शिया उन पर कमा हक्कहू अमल पैरा हैं और इस बात की गवाही शिया के अक़ायद, उनकी फ़िक़ह और उनकी हदीसों की किताबें इस बात की बेहतरीन गवाह हैं और इस सिलसिले में अभी जल्दी ही एक मुफ़रसल इनसाईक्लो पीडिया (मोअजम) भी दस जिल्दों में छपी है जिस में रसूले इस्लाम (स) की शिया किताबों से रिवायतों को जमा किया गया है। जिसका नाम सोननून नबी (स) है।



[15]. बहसे खुम्स से मुतअल्लिक शिया फ़ोक़हा की इस्तिदलाली  
और इस्तिमबाती किताबें मुलाहिज़ा करें।